PHILOSOPHY

PG, Paper VIII (B.A.-Hons, Paper-I & VIII)

Concept of World (Shankar & Ramanuj)

शंकर और रामानुज के अनुसार जगत की अवधारणा

Dr. S.K. Singh
Mob.-9431449951

(A) शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त में जगत :—

→ शंकराचार्य के अनुसार कार्य कारण से अपृथक है, उसकी एक अवस्थामात्र है 'कारणस्यैवैषावस्थामात्रं कार्यम्'। उन्होंने कार्य को कारण का वास्तविक विकार न मानकर उसका विवर्त कहा है। ~~ब्रह्म सत्य 'ब्रह्म' सत् है, उसकी अद्वैत सत्ता है तथा जगत् ब्रह्म का विवर्त है।~~

→ शंकराचार्य इसी विवर्तवादी अर्थ में जगत् को कार्य और निरपेक्ष ब्रह्म को कारण माना है। दृश्य जगत का वास्तविक कारण स्वयं ब्रह्म है जो अपने आपमें अखिल है और कार्य-संवृत्तियाँ (जगत्) मिथ्या हैं।

→ शायद इसे 'सत्कारणवाद' कहना अधिक उचित होगा क्योंकि अद्वैत कारण (ब्रह्म) ही सत् है और सदा वर्तमान है तथा कार्य-संवृत्तियाँ (जगत्) मिथ्या है।

→ विवर्त का अर्थ है कि कारण-कार्य संबंध अपरिमाणेय है, कार्य को न सत् कहा जा सकता है, न असत्। कार्य सत् का केवल आभास देता है किन्तु यह असत् भी नहीं है। इसकी व्यावहारिक सत्ता, जब तक हम व्यावहारिक जगत में रहते हैं, बनी रहती है। पारमार्थिक ब्रह्मानुभूति के बाद ही सारी कार्य-संवृत्तियाँ तिरोहित होती हैं, पहले नहीं। अतः दृश्य जगत और निरपेक्ष सत्ता की एक कोटि नहीं है। यदि ऐसा होता तो हीगेल और रामानुज की तरह कार्य को कारण का तात्विक परिणाम माना जाता।

→ अद्वैत दर्शन का विवर्तवाद उसकी तत्वमीमांसा का ही प्रतिफल माना जायेगा। इसके अनुसार कार्य की व्यवहार की दृष्टि से उपयोगिता होते हुये भी तत्व की दृष्टि से कार्य, कारण का परिवर्तित रूप नहीं है। वास्तव में कारण और कार्य तत्व की दृष्टि से अभिन्न है।

Scanned with CamScanner

(B) रामानुज का जगत् विचार :-

→ रामानुज का ब्रह्म (ईश्वर) चिदचित् विशिष्ट है {चित् + अचित् + विशिष्ट} है। रामानुजाचार्य ब्रह्मपरिणामवाद को ~~मान~~ स्वीकार करते हैं। ब्रह्म ही कारण और कार्य - दोनों रूपों में जगत् का उपादान है। प्रलयकाल में चित् और अचित् अपनी सूक्ष्मावस्था में रहते हैं; यह ब्रह्म का कारणावस्था है। सृष्टि के समय चिदचित् स्थूल रूप धारण कर लेते हैं, यह ब्रह्म की कार्यावस्था है।

→ यह संपूर्ण चेतन-अचेतन विश्व ईश्वर का शरीर है, ईश्वर का तात्त्विक परिणाम है, ईश्वर की सत् सृष्टि है। चित् और अचित्, जीव और जगत् ईश्वर के विशेषण, अंग या शरीर हैं तथा ईश्वर उनसे विशिष्ट, अंगी एवं उनका अन्तर्यामी आत्मा है।

→ रामानुज ईश्वर को ही जगत्-कारण मानते हुये इस सृष्टि को ईश्वर की लीला बताया है तथा इसे ईश्वर के संकल्प से उत्पन्न माना है। जीवों को अपने कर्मों का फल भोगने के लिये शरीर, इन्द्रिय, अन्तःकरण आदि की आवश्यकता होती है तथा भोग्य-पदार्थ की आवश्यकता होती है। ~~बस~~ इन सब की पूर्ति के लिये सृष्टि होती है। अतः कर्मवाद सृष्टि का हेतु है।

→ रामानुज के अनुसार कर्म-सिद्धांत भी ईश्वरीय संकल्प का ही एक अंग है और इसके प्रतिकूल नहीं है। जीवों को कर्म करने के लिये संकल्प-स्वातंत्र्य दिया गया है, अतः उन्हीं को शुभाशुभ फल भोगने पड़ते हैं। ईश्वर कर्माध्यक्ष है। ईश्वर की भक्ति से, ईश्वर की कृपा से वे दुःखमुक्त हो सकते हैं। ईश्वर का कार्य जीवों को दुःख देना नहीं है, दुःखों से मुक्त करना है।

⇒ इस प्रकार शंकराचार्य अपने अद्वैत वेदान्त में अपने कार्य-कारण-सिद्धांत 'विवर्तवाद' के आधार पर अद्वैत ब्रह्म की स्थापना करके उसके कार्य-रूप जगत् की व्यावहारिक सत्यता को स्वीकारते हैं किन्तु पारमार्थतः जगत् को मिथ्या कहते हैं जबकि रामानुजाचार्य अपने ब्रह्मपरिणामवाद के आधार पर ब्रह्म को चित्-अचित् से विशिष्ट संबंध (अंग-अंगी, अंश-अंशी संबंध) बतलाते हुये जगत् को ब्रह्म का परिणाम बतलाते हैं ~~उसकी~~ और ब्रह्म ~~की सृष्टि~~ को जगत् का निमित्तोपादान कारण स्वीकारते हुये जगत् की सत्यता को स्थापित करते हैं।

Scanned with CamScanner